By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-3

Topic-Political Party in India

Class-B.A Degree-2 (Hons.,P-3)

Subject-Political Science

Date-28 Oct.2020

By Rahul Kumar Jha.

भारत में दलीय व्यवस्था :—
(Party System in India)

साम्यवादी दल :—

भारत में साम्यवादी आंदोलन का उद्गम, अन्य देशों की भाँति, मार्क्सवाद के मूल सिद्धांतों से प्रेरित है कि पूँजीवाद का सर्वनाश और समाजवाद की स्थापना अनिवार्य है। सितम्बर, 1924 में, कानपुर के एक संवाददाता, सत्य भक्त ने कानूनी रूप से भारतीय साम्यवादी दल की स्थापना की घोषणा की। भारतीय साम्यवादियों का पहला सम्मेलन कानपुर में दिसम्बर 1925 में हुआ। एम. सिंगारवेलु चेटिर दल के अध्यक्ष थे। इस सम्मेलन में भारतीय साम्यवादी दल की स्थापना संबंधी प्रस्ताव

पास किया गया, जिसका मुख्यालय बम्बई रखा गया। 1920 के दशक के अंतिम और 1930 के दशक के प्रारम्भिक वर्षों में साम्यवादी गतिविधियों का मुख्य केंद्र श्रमिक संगठन थे, जिनमें दल को काफी सफलताएं मिलीं। 1930 के दशक के दौरान दल ने राष्ट्रवादी आंदोलन के सहयोग से संयुक्त मोर्चा बनाने की नीति अपनाई। साम्यवादी कांग्रेस में शामिल हो गए और शीघ्र ही कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी नामक समाजवादी संगठन का नेतृत्व सम्भाल लिया। किन्तु दोहरी सदस्यता के मुद्दे को लेकर उन्हें 1939 में कांग्रेस से निष्कासित कर दिया गया। जब नाजियों ने सोवियत संघ पर आक्रमण किया, तो कांग्रेस के साथ दल के संबंध पूरी तरह टूट गये।

आज़ादी के बाद साम्यवादी दल कांग्रेस के विरुद्ध नीति अपनाई क्योंकि बी.टी. रणदिवे और डा. अधिकारी का मानना था कि स्वतंत्रता केवल भारतीय साम्यवादी दल के नेतृत्व में ही प्राप्त की जा सकती है। दल ने अपने कार्यक्रम में कांग्रेस की नीतियों का विरोध करने के साथ-साथ पहले आम चुनावों के समय से ही संसदीय लोकतंत्र में

2020/10/19 12

भाग लेना शुरू कर दी। भारत में साम्यवादी दल को केरल आंदोलन के बढ़ते चरणों का ऐतिहासिक कीर्तिमान तब स्थापित हुआ, जब 1957 में साम्यवादी दल को केरल में स्पष्ट बहुमत मिला और उसने वहां सरकार बनाई।

1962 में भारत-चीन युद्ध और भारत-चीन सीमा विवाद के मुद्दे पर साम्यवादी दल दो धड़ों में विभाजित हो गई। ज्योति बसु और नम्बूदरीपाद के नेतृत्व में 1964 में वामपंथियों ने स्वयं को भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के रूप में गठित किया दूसरी तरफ एस. ए. डांगे के नेतृत्व में सी.पी. आई. बना रहा।

परंतु आगे चलकर फिर इन वामपंथी दलों में एकता स्थापित करके भारत के तीन राज्यों प. बंगाल, केरल और त्रिपुरा में लंबे समय तक सत्ता में रही साथ ही 2004-09 में केन्द्र में यू.पी.ए. सरकार में भी सम्मिलित रही। परंतु आज वर्तमान परिवेश में भारत में वामपंथी दल वैचारिक और, सत्ता प्राप्ति और जनाधार के संदर्भ में संघर्ष कर रही है।